INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(1): 110-113
Received: 18-02-2023
Accepted: 21-03-2023

डॉ० श्याम मूर्ति भारती
इतिहास विभाग, रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० श्याम मूर्ति भारती
इतिहास विभाग, रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, मधुबनी, बिहार, भारत

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान

डॉ० श्याम मूर्ति भारती

सारांश
महिलाएं देश में आधी आबादी का नेतृत्व करती हैं। महिलाओं के योगदान को विस्मृत कर भारतीय इतिहास को लिखा जाना संभव नहीं है। प्रागैतिहासिक काल से महिलाएं पुरुषों का सहयोग करती आ रही हैं। प्रारम्भ में महिलाओं को अपनी महत्ता का अहसास नहीं था। किन्तु देश में जब सामाजिक पुनर्जागरण से प्रगतिशील विचारधारा जोड़ पकड़ने लगी तब महिलाओं ने अपनी महत्ता को पहचानना शुरू किया। कई लेखकों ने भी अपने लेखन के माध्यम से महिलाओं को यह एहसास दिलाया कि वह साहस तथा शौर्य में पुरुषों के समान है। तथा प्रत्येक वह कार्य करने में सक्षम है, जिसे पुरुष करते आ रहे हैं। इस सम्बंध में सुभद्रा कुमारी चौहान का कथन प्रासंगिक है- "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" विभिन्न प्रकार की गुलामियों से मुक्ति हेतु सदियों से प्रयास होते रहे हैं। जिनमें महिलाओं ने भी खुल कर पुरुषों का साथ दिया। औपनिवेशिक व्यवस्था के विरोध में भारत में जब स्वाधीनता संग्राम प्रारम्भ हुआ तो उसमें बिहार की महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं की महत्ता के सन्दर्भ में लार्मिटन का कथन है कि- "सम्पूर्ण महान कार्य के प्रारम्भ में किसी न किसी स्त्री का हाथ रहा है।" भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में मातृत्व शक्ति की भूमिका को कभी नहीं भुलाया जा सकता। जिन्होंने इस भव्य भारत मन्दिर के निर्माण में नींव के पत्थर का कार्य किया।

कूटशब्द : सत्याग्रह, मातृशक्ति, स्वाधीनता संग्राम, आंदोलन, अपील, बहिष्कार, प्रेरणा, आजादी।

प्रस्तावना
गाँधीजी ने अपना प्रथम सत्याग्रह दक्षिण अफ्रीका में शुरू किया था। जहाँ उनके आदर्शों से प्रभावित होकर महिलाओं ने सत्याग्रह में उनका साथ दिया। 1915 ई. में जब गांधीजी का भारत आगमन हुआ तो राजकुमार शुक्ल ने गाँधी जी का ध्यान बिहार स्थित चम्पारण के नील किसानों की ओर आकृष्ट कराया। नील किसानों के समर्थन में गांधीजी ने भारत मे अपना पहला सत्याग्रह प्रारम्भ किया। गांधीजी के सत्याग्रह के कारण नील किसानों की समस्या का काफी हद तक अंत हुआ। गांधीजी द्वारा किये गए इस अहिंसक सत्याग्रह के फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा उनकी कुछ मांगों को मान लिये जाने का बिहार की महिलाओं के साथ सम्पूर्ण जनता में सकारात्मक संदेश पहुँचा और उनका मनोबल बढ़ा। क्योंकि ऐसा प्रथम बार हुआ कि अंग्रेजों ने भारतीयों की बातों को मान लिया था। गांधीजी ने जब गुजरात के बारदौली में सत्याग्रह किया तो महिलाओं का भी समर्थन मिला। गांधीजी ने भारत में सत्याग्रह आंदोलन के क्रम में मातृ-शक्ति का आह्वान करते हुए उनके नाम से एक खुली चिट्ठी लिखी

तथा उनसे विदेशी वस्त्र एवं नशीले पदार्थों का बहिष्कार कर उनसे स्वतंत्रता संग्राम में सहायता देने की अपील की। ताकि विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी हस्त-निर्मित वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके। अन्य रचनात्मक कार्यों के साथ महिलाएँ अपना बचा समय लगा कर बहुत सहायता कर सकती थीं। गांधीजी ने कहा कि... "विदेशी वस्त्र विक्रेताओं तथा क्रेताओं एवं शराब पीनेवालों एवं बेचनेवालों से उनकी अपील उनका हृदय पिघलाए बिना नहीं रह सकती थीं।" उन्होंने यह भी कहा कि यह असम्भव नहीं कि इस सिलसिले में उन्हें अपमानित किया जाए ! किन्तु ऐसा अपमान सहना भी उनके लिए गौरव की बात होगी। किन्तु ऐसी स्थिति आने पर देश की अग्नि परीक्षा जल्दी खत्म होगी।

गांधीजी के अहिंसक आंदोलन को चम्पारण में देख चुकीं बिहार की महिलाओं पर गांधीजी की अपील का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। तथा उन्होंने अपील के मद्देनजर पटना में विदेशी वस्त्रों बहिष्कार किया। पटना में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की सफलता का श्रेय महिलाओं को दिया जाता है। विंध्यवासनी देवी तथा श्रीमती हसन इमाम के नेतृत्व में अनेक महिलाओं ने पटना में विदेशी वस्त्रों के दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन को सफल बनाया। तथा दुकानदारों से विदेशी वस्त्र का व्यापार नहीं करने की अपील की। महिलाओं के क्रांतिकारी रूप को देख कर पटना में पदस्थापित तत्कालीन मजिस्ट्रेट ने महिलाओं से मुकाबला करने हेतु 'महिला पुलिस' नियुक्त करने का सुझाव दिया। यद्यपि यह सुझाव तत्कालीन जिलाधिकारी एवं आयुक्त को व्यवहारिक प्रतीत नहीं हुआ। महिलाओं का अदम्य साहस नमक आंदोलन के दौरान भी देखने को मिला जब शाहाबाद जिले के श्री राम बहादुर बार–एट–ला की पत्नी ने सहसराम थाने के समक्ष नमक, बना कर नमक कानून का उल्लंघन किया। गांधीजी के नेतृत्व तथा अपील का प्रभाव सम्पूर्ण बिहार की महिलाओं पर दिखने लगा था। देशबंधु कोष हेतु जब गांधीजी ने बिहार का भ्रमण किया तो महिलाओं ने अपने आभूषण तक दान में दे दिए। देशबन्धु कोष के कार्य में गांधीजी को जयप्रकाश नारायण की पत्नी प्रभावती देवी का महत्वपूर्ण सहयोग मिला। महिलाओं में जागरण के सन्दर्भ में जनवरी, 1929 मील का पत्थर सिद्ध हुआ। जब पटना में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में बिहार की महिलाओं को देश के विभिन्न भागो से आई महिलाओं से मिलने, उनके विचारों को जानने तथा महिला समाज में व्याप्त सीमाओं को दूर करने के तरीकों पर विचार करने के साथ देश की स्वतंत्रता हेतु सार्थक पहल पर आपसी संवाद किया। बिहार में सम्मेलन की एक शाखा की नींव रखी गई। जिसका एक अधिवेशन 17 दिसम्बर, 1929 को हुआ। जिसमें शारदा एक्ट के समर्थन तथा पर्दा प्रथा एवं दहेज प्रथा जैसी बुराईयों के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। बिहार की अनेक महिलाओं ने इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी उन्होंने अपने कार्यों से न सिर्फ स्त्री वर्ग को जागृत करने का प्रयास किया बल्कि अपने प्राणों की चिन्ता न कर स्वतन्त्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा किया। इन साहसी महिलाओं में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की बहन भगवती देवी, उनकी पत्नी राजवंशी देवी, जयप्रकाश नारायण की पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती विन्धयवासिनी देवी, श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, लाल बहादुर शास्त्री की बहन एवं शंभु शरण वर्मा की पत्नी श्रीमती सुन्दरी देवी, श्रीमती सरस्वती देवी, श्रीमती प्रियवंदा देवी तथा श्रीमती भवानी मल्होत्रा आदि नाम प्रमुख हैं।

1857 की क्रान्ति को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है। जिसमे बिहार के बाबू कुंवर सिंह ने महत्पूर्ण भूमिका निभाई थी। बाबू कुंवर सिंह ने जब अंग्रेजों के विरुद्ध सेना का नेतृत्व किया तो इस संग्राम में गुप्त रूप से कई महिलाओं ने कुंवर सिंह की सहायता की। जिनमें आरा क्षेत्र की करमन बाई, धरमन बाई तथा नर्तकी गुलाबी आदि प्रमुख हैं। नर्तकी, गुलाबी कुंवर सिंह को बचाने के प्रयास शहीद हो गयीं। जिसकी स्मृति में कुंवर सिंह ने आरा मे एक मस्जिद का निर्माण करवाया।

गांधीजी महिलाओं की शक्ति को पहचानते थे। इसे वे दक्षिण अफ्रीका में देख भी चुके थे। अत: पहली बार 1917 ई० में प्रथम बार बिहार आगमन पर उन्होंने सभी लोगों से स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने की अपील की। गांधीजी का मानना था कि स्वराज्य की विजय में देश की स्त्रियों का उतना ही हिस्सा होना चाहिए जितना पुरुषों का। शुद्ध भावना से स्त्रियाँ कार्य कर पहाड़ों को भी हिला दे सकती हैं। तथा आंदोलन के दौरान जब पुरुष जेल जायेंगे तो महिलाएँ उनके कार्यों को सम्पादित कर सकेंगी। साथ ही लोगों को समझाने-बुझाने का कार्य पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं कुशलतापूर्वक कर सकती हैं, क्योंकि उनमें अहिंसा की प्रवृति अधिक है। गांधीजी ने जब आंदोलन को अहिंसात्मक रूप दिया तो महिलाओं ने इसमें अच्छी भागीदारी निभायी। मातृशक्ति निर्भीकता पूर्वक हर प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेतीं, राष्ट्रीय नेताओं के आगमन पर सभा, सम्मेलनों में उनका साथ देती तथा उनके अपील पर लड़ाई के मैदान में कूद पड़ने के लिए हर समय

तैयार रहती थीं।

गांधीजी महिलाओं की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। अतः उन्होंने महिलाओ के नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने, उन्हें व्यवहारिक शिक्षा देने, उन्हें जात-पात के जंजीरों से छुड़ाने तथा मातृशक्ति को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। बिहार की महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय से ही शुरू हो गयी थी। किन्तु महिलाओं का अनुपात प्रारंभिक अवस्था में न्यूनतम था। अर्थात वे राजनीति में कोई महत्वपूर्ण सक्रिय योगदान नहीं करती थीं। यधपि 1889 में बिहार क्षेत्र से स्वराज्य कुमारी देवी तथा कादम्बिनी गांगुली के साथ 10 महिलाओं ने बम्बई कांग्रेस में भाग लिया था।

गांधीजी के व्यक्तित्व तथा अहिंसक आंदोलन से प्रभावित बिहार की महिलाओं ने अथक प्रयास किए। जिनमें सरला देवी चौधरी प्रमुख थीं। उन्होंने न सिर्फ कांग्रेस संगठन हेतु कार्य किया बल्कि 1921 ई. में ब्रिटिश राजकुमार के भारत आगमन के क्रम में किए जानेवाले स्वागत समारोहों का विरोध भी किया। फलत: ब्रिटिश राजकुमार के पटना आगमन पर शहर में हड़ताल रखा गया। राजकुमार के भारत आगमन के विरोधस्वरूप कई वकील कचहरी नहीं गए। जो महिलाएं देश की एकता तथा अंग्रेजी सत्ता विरोध के महत्त्व को समझती थीं वे अन्य महिलाओं को जागरुक करने का कार्य करती थीं। ऐसी महिलाओं में सावित्री देवी तथा उर्मिला देवी प्रमुख थीं। सावित्री देवी को तीन महीने कैद में भी बिताने पड़े थे। बिहार की महिलाओं ने विभिन्न संगठन में भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई तथा महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित भी किया। बिहार प्रान्तीय कांग्रेस की कोषाध्यक्ष तथा कौमी सेना दल की अध्यक्षा भागलपुर क्षेत्र की लीला सिंह ने प्रान्त की महिलाओं को कांग्रेस के सांगठनिक कार्यों से जोड़ने का प्रयास किया। फलत: कांग्रेस के अहमदाबाद सम्मेलन में बिहार की श्रीमती लाला दौलत राम, हरमति देवी, जानकी देवी, गुलाबो देवी तथा लीला सिंह जैसी साहसी महिलाओं ने भाग लिया। कांग्रेस संगठन हेतु कार्य करने के लिए श्रीमती कृष्णा कुमारी देवी ने विभिन्न स्थानों का दौरा किया। ताकि संगठन को मजबूत किया जा सके। इन स्थानों में बाढ़ तथा बेगूसराय आदि प्रमुख हैं। आजादी की लड़ाई में हिन्दू-मुस्लिम परिवार की महिलाएँ, शहरी-ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं सभी आगे बढ़ कर अंग्रेजों के विरुद्ध कार्यक्रमों में भाग ले रही थीं।

भारत में जब असहयोग आंदोलन प्रारंभ हुआ तो इसमें बिहार प्रदेश के लोगों ने भी आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। असहयोग आंदोलन में बिहार की महिलाएं यथा श्रीमती सुनीति देवी, श्रीमती रामसखी देवी घटारों, श्रीमती विन्दा देवी, श्रीमती सीता देवी तथा श्रीमती सत्यभामा देवी ने घर से निकर कर पुरुषों के साथ आंदोलन में सक्रियता दिखाई। कुछ महिलाओं को आंदोलन के दौरान जेल भी जाना पड़ा। उन महिलाओं के जेल से वापस आने पर गांधीजी ने स्वयं आकर उनसे मुलाकात की थी। कांग्रेस में कार्य करनेवाली महिलाओं में श्रीमती विन्धवासिनी देवी, माधुरी देवी तथा उर्मिला देवी प्रमुख नाम हैं। विन्ध्यवासिनी देवी गया कांग्रेस में स्वयंसेविका दल संगठित कर अपनी दक्षता का परिचय देते हुए नेतृत्व किया था। कुछ महिलाएं अपने पतियों के साथ कांग्रेस के अधिवेशन में जाती रही, जैसे- श्रीमती रामझरी देवी ने अपने पति महेन्द्र सिंह साथ 1926 के गौहाटी अधिवेशन, 1929 के लाहौर कांग्रेस, 1931 के करांची अधिवेशन तथा 1934 के बम्बई सम्मेलन में भाग लिया था एवं दीप नारायण सिंह की पत्नी लीला सिंह अपने पति के साथ सक्रिय योगदान दे रही थीं।

कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने से बिहार की महिलाओं का देश के अन्य भागों में रहने वाली महिलाओं से मिलने, उनके विचारों को जानने तथा समाज मे प्रचलित कुप्रथाओं को दूर करने के सम्बंध में विचार-विमर्श हुआ। फलतः उन्होंने शारदा एक्ट का समर्थन तथा दहेज प्रथा का विरोध किया। महिलाओं द्वारा इस प्रकार विभिन्न संगठनों तथा सम्मेलनों में भाग लेने से आजादी के संघर्ष में तीव्रता आयी तथा कांग्रेस का आधार भी अधिक मजबूत होने लगा। इस संदर्भ में श्रीमती चन्द्रावती देवी का नाम उल्लेखनीय है जिन्हे बेतिया में स्थानीय कांग्रेस कमिटि का उपसभापति चुना गया।

वर्ष 1930 में जब गांधीजी को गिरफ्तार किया गया तो इस घटना का विरोध लगभग समूचे भारत में हुआ। बिहार में भी गांधीजी की गिरफ्तारी का व्यापक असर पड़ा। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के आवाहन पर बिहार में जगह-जगह विदेशी वस्त्रों तथा शराब की दुकानों पर धरना दिया। विदेशी वस्त्र के विरोध तथा शराब की दुकानों के समक्ष धरने में बिहार के महिलाओं की अग्रणी भूमिका रही। बिहार में सभाओं के आयोजन तथा हड़ताल के साथ-साथ अदालती कार्यों का भी बहिष्कार किया गया।

निष्कर्ष

बिहार में स्वतंत्रता संघर्ष का लम्बा इतिहास रहा है। औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध जब भी आवाज बुलंद हुई तो

बिहार के लोग अग्रणी पंक्ति में खड़े हुए। किन्तु यह पंक्ति तब और सशक्त हो गई, जब इसमें मातृशक्ति की सक्रिय भूमिका हो गई। बिहार का यह सौभाग्य था कि गांधीजी ने भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह बिहार प्रान्त की भूमि पर किया। गांधीजी का यह सत्याग्रह महिलाओं हेतु प्रेरणास्रोत बना। और इस प्रेरणा को और बल मिला जब भारत में गांधीवादी आंदोलन विभिन्न मुद्दों को लेकर आगे बढ़ा। अंग्रेजों का विरोध जैसे- जैसे बढ़ता गया वैसे-वैसे देश की आजादी के लिए महिलाओं का साहस भी बढ़ता गया। फलत: देश को आजाद होने तक महिलाएँ इस मोर्चे पर डटी रही और अंतत: 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ जिसमें बिहार के महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

सन्दर्भ

1. कुमार अमरेन्द्र, स्वाधीनता संग्राम में बिहार की महिलाएं, हिन्दुस्तान, दिनांक 15-08- 1997, पृ०-17
2. तथैव, पृ०- 23
3. तथैव, पृ०- 28
4. बिहार की महिलाएं, स. शिवपूजन सहाय, पृ०- 332
5. तथैव, पृ०- 204
6. वर्णवाला, महेश कुमार, भारती डॉ० श्याम मूर्ति, बिहार एक समग्र अध्ययन (2019), कॉसमॉस पब्लिकेशन, दिल्ली
7. दत्त, के० के०, बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, खण्ड- 3, पृ०-33
8. तथैव, पृ०- 48
9. झा, दिगम्बर (प्र.सं.)- 1971, बिहार का खादी आंदोलन और उसका विकास, पृ०- 32
10. सलोना श्याम, बिहार समग्र, केबीसी नैनो पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृ० ९६